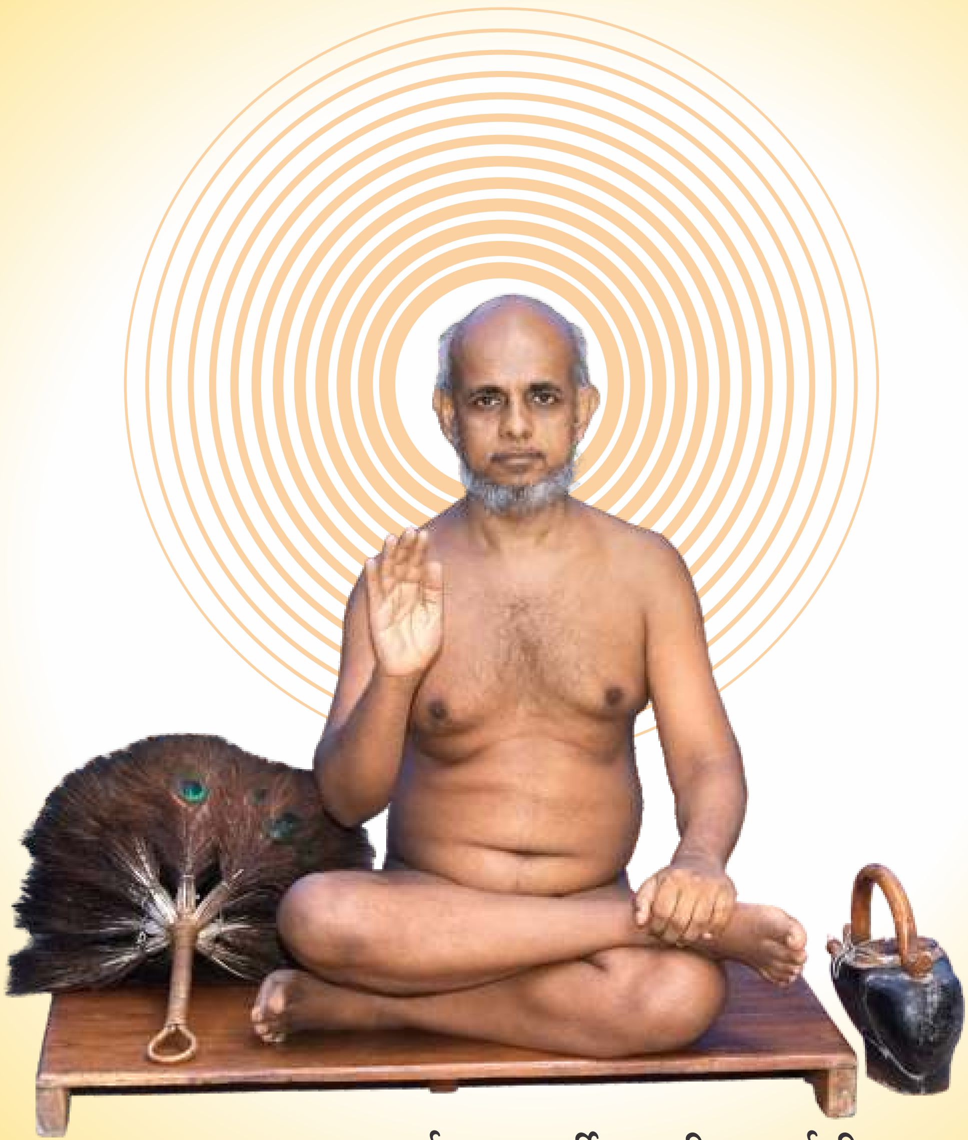

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद चन्दनषष्ठी विधान

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
चन्दन षष्ठी विधान

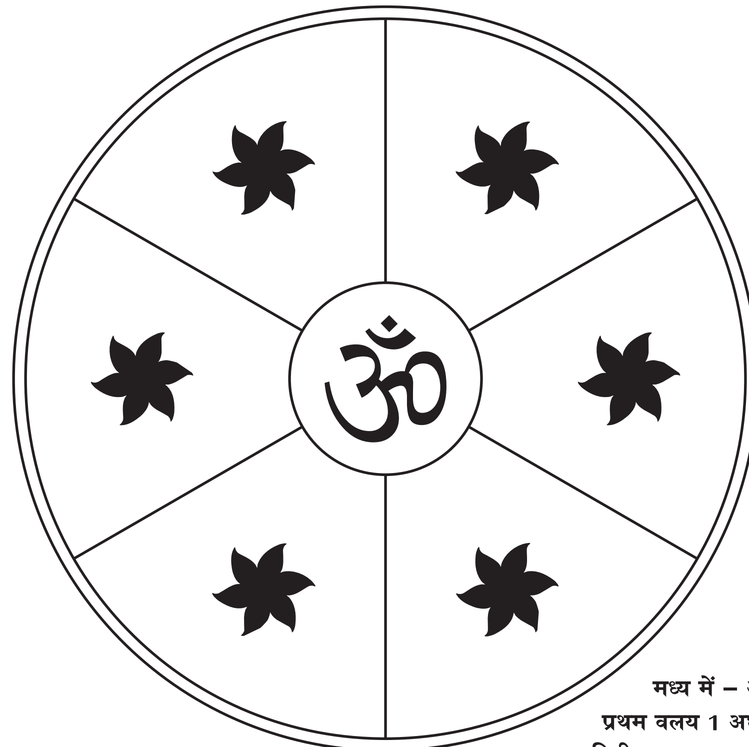

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय 1 अर्घ्य
द्वितीय वलय 1 अर्घ्य
तृतीय वलय 1 अर्घ्य
चतुर्थ वलय 1 अर्घ्य
पंचम वलय 1 अर्घ्य
षष्ठ वलय 1 अर्घ्य
कुल 6 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद चन्दन षष्ठी विधान**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660998425

संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी

कम्पोजिंग : ब्र. सपना दीदी 9829127533

संस्करण : प्रथम 2017 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 21/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : 1. **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,
नियर लाल बत्ती चौक
गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

3. **सुरेश सेठी**
पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,
दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री कैलाशचन्द जैन बड़जात्या

123/23, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651 9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

श्री चन्दन षष्ठी व्रत कथा

नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चन्दन षष्ठी व्रत कथा, कहूँ 'विशद' हितकार॥

काशी देश में बनारस नाम का प्रसिद्ध नगर है। जिसको तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान ने अपने जन्म धारण करने से पवित्र किया था। उसी नगर में किसी समय एक सूरसेन नाम का राजा राज करता था। उसकी रानी का नाम पद्मनी था। एक समय वह राजा सभा में बैठा था कि वनपाल ने आकर छः ऋतुओं के फल फूल लाकर राजा को भेंट किये। राजा इस शुभ भेंट से केवली भगवान का शुभागमन जानकर स्वजन और पुरजन सहित वंदना को गया और भक्ति पूर्वक त्रय प्रदक्षिणा देकर नमस्कार करके बैठ गया। श्री मुनिराज ने प्रथम ही मुनिधर्म का वर्णन करके पश्चात श्रावक धर्म का वर्णन किया। उसमें भी सबसे प्रथम सब धर्मो का मूल सम्यकदर्शन का उपदेश दिया कि तुस्वरुप का यथार्थ श्रद्धान हुए बिना सब ज्ञान और चारित्र निष्फल हैं और वह वस्तु स्वरुप का श्रद्धान सत्यार्थ देव (अर्हन्त) सत्यार्थ गुरु (निर्ग्रन्थ) और दयामयी (जिनप्रणीत) धर्म ही होता है।

अतएव प्रथम ही इनका श्रद्धान होना आवश्यक है तत्पश्चात अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बह्मचर्य और परिग्रह त्याग ये पाँच व्रत एकदेश पालन करे तथा इन्हीं के यथोचित पालनार्थ सप्तशीलों (तीन गुण व्रत और चार शिक्षा व्रतों) का भी पालन करें, इत्यादि उपदेश दिया, तब राजा ने हाथ जोड़कर पूछा-हे प्रभु! मेरी रानी के प्रति मेरा अधिक स्नेह होने का क्या कारण है? यह सुनकर श्री गुरुदेव ने कहा-

राजा! सुनो, अवन्ती देश में एक उज्जैन नाम का एक नगर है, वहाँ वीरसेन नाम का राजा था और उसके वीरमति रानी थी। इसी

नगर में जिनदत्त नामक सेठ थे *(जिनप्रणीत)* उसकी जयावती नामक सेठानी से ईश्वरचन्द नाम का पुत्र हुआ था जो कि अपने मामा की पुत्री चन्दना से पाणिग्रहण कर सुख से कालक्षेप करता था।

एक समय सेठ जिनदत्त सेठानी जयावती कुछ कारण पाकर दिगम्बरी दीक्षा ग्रहण कर मुनि और आर्यिका हो गये और तप के माहात्म्य से अपनी-अपनी आयु पूर्णकर स्वर्ग में देव-देवी हुए और पिता का पद प्राप्त करके ईश्वरचन्द सेठ भी चंदना सहित सुख से रहने लगा।

एक दिन अतिमुक्तक नाम के मुनिराज मासोपवास के अनन्तर नगर में पारणा निमित्त आये सो ईश्वरचन्द ने भक्ति सहित मुनि को पड़गाहन कर अपनी स्त्री से कहा कि श्री गुरु को आहार देओ। तब चन्दना बोली-स्वामी मैं ऋतुवती हूँ आहार कैसे दूँ?

ईश्वर चंद्र ने कहा कि गुपचुप रहो, हल्ला मत करो, गुरुजी मासोपवासी हैं इसलिए पारणा कराओ।

चंदना ने पति वचनानुसार मुनिराज को आहार दे दिया मुनिराज तो आहार कर वन को चले गये और यहाँ तीन ही दिन पश्चात इस गुप्त पाप का उदय होने से पति-पत्नि दोनों के शरीर में गलित कुष्ठ हो गया वे अत्यन्त दुखी हुए और कष्ट से दिन बिताने लगे।

एक दिन भाग्योदय से श्रीभद्र मुनिराज संघ सहित उद्यान में पधारे सो नगर के लोग वंदना को गये और ईश्वरचंद भी अपनी भार्यासहित वंदना को गया, भक्ति पूर्वक नमस्कार कर बैठा और धर्मोपदेश सुना, पश्चात पूछने लगा-हे दीन दयाल! हमारे यहाँ कौन पाप का उदय आया है जिससे यह व्याधी उत्पन्न हुई है। तब मुनिराज ने कहा-तुमने गुप्त कपट कर पात्रदान के लोभ से अति मुक्तक मुनिराज को ऋतुवती होने की अवस्था में भी मन, वचन,

काय शुद्ध है, कहकर आहार दिया अर्थात तुमने अपवित्रता को भी पवित्र कहकर चारित्र का अपमान किया है सो इसी पाप के कारण से यह असातावेदनीय कर्म का उदय आया है।

व्रतविधि यह सुनकर उक्त दम्पत्ति (सेठ-सेठानी) ने अपने अज्ञान कृत्य पर बहुत पश्चाताप किया और पूछा-प्रभु! अब कोई उपाय इस पाप से मुक्त होने का बताइये, तब श्री गुरु ने कहा-हे भद्र! सुनो-आश्विन वदी षष्ठी (गुजराती भादों वदी 6) को चारों प्रकार के आहार का त्याग करके उपवास धारण करो तथा जिनालय में जाकर पंचामृत से अभिषेक पूजन करो, अर्थात् छः प्रकार के उत्तम और प्रासुक फलों सहित अष्ट द्रव्य से छः अष्टक चढ़ावो, अर्थात् छः पूजा करो। एक सौ आठ (108) बार णमोकार मंत्र का फलों व फूलों द्वारा जाप करो, चारों संघ को चार प्रकार का दान देवो।

इस प्रकार व्रत करो। तीनों काल सामायिक, व्रत, अभिषेक, पूजन करो, घर के आरंभ व विषयकषायों का उपवास के दिन और रात्रि भर आठ प्रहर तथा धारणा-पारणा के दिन 4-4 प्रहर, ऐसे सोलह प्रहरों तक त्याग करो।

इस प्रकार छः वर्ष तक यह व्रत करो। पश्चात् उद्यापन करो अर्थात् जहाँ जिन मंदिर न हो, वहाँ छः जिनालय बनवाओ, छः जिनबिम्ब पधराओ, छः जिनमंदिर का जीर्णोद्धार कराओ, छः शास्त्रों का प्रकाशन करो, छः-छः सब प्रकार उपकरण मंदिर में चढ़ाओ, छात्रों को भोजन कराओ, चार प्रकार के (आहार, औषधि, शास्त्र, अभयदान) दान देवो इस प्रकार दम्पत्ति ने व्रत की विधि सुनकर मुनिराज की साक्षीपूर्वक व्रत ग्रहण करके विधि सहित पालन किया कुछ दिन में अशुभ कर्म की निर्जरा होने से उनका शरीर बिल्कुल निरोग हो गया और आयु के अन्त में सन्यास मरण करके वे दम्पत्ति

स्वर्ग में रत्नचूल और रत्नमाला नामक देव देवी हुए, सो बहुत काल तक सुख भोगते हुए नंदीश्वर आदि अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा वंदना करते काल क्षेप करते रहे।

अन्त में आयु पूर्णकर वहाँ से चयकर तुम राजा हुए हो और वह रत्नमाला देवी तुम्हारी पट्टरानी पद्मनी हुई है। सो यह तुम दोंनो का पूर्वभवों का संबंध होने से ही प्रेम विशेष हुआ है। यह वार्ता सुनकर राजा को भवभोगों से वैराग्य उत्पन्न होने से उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर दीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण किया और तप के प्रभाव से थोड़े ही काल में केवलज्ञान प्राप्त करके वे सिद्ध पद को प्राप्त हुए, और रानी पद्मनी ने भी दीक्षा ली सो वह तप के प्रभाव से स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ, वहाँ से चयकर मनुष्य भव लेकर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार ईश्वरदत्त सेठ और चन्दना सेठानी ने इस चंदनषष्ठी व्रत के प्रभाव से नर–सुर के सुख भोगकर मोक्ष प्राप्त किया और जो नर–नारी यह व्रत पालेगे, वे भी अवश्य उत्तम पद पावेंगे।

दोहा- चन्दन षष्ठी व्रत करें, भाव सहित जो लोग।
'विशद' भोग वे प्राप्त कर, पावें शिव संयोग॥

नोट : व्रत के दिन चन्दन षष्ठी व्रत पूजा एवं उद्यापन के अवसर पर यह चन्दन षष्ठी व्रत विधान अवश्य करें। प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज ने अपने उपयोग को श्री चन्द्रप्रभु भगवान की भक्ति से समर्पित करते हुए विशुद्ध भावों से इस विधान की रचना की है।

यदि आप चन्दन षष्ठी व्रत नहीं रखते तो भी अज्ञान दशा में चर्या में लगे दोषो के निवारणार्थ यह विधान पूजा चन्दन षष्ठी वाले दिन अवश्य करें।

–ब्र. सपना दीदी

चन्दन षष्ठी व्रत का

मंगलाचरण एवं व्रत विधान

मंगलमय मंगल परम, गुण अनन्त सुख धाम।
सुखदायक सुख निधि विशद, पावन परम ललाम॥1॥
धवल चंद सम चन्द्रप्रभु, लक्षण चन्द महान।
चन्द प्रभू जिनराज पद, बारम्बारप्रणाम॥2॥
गौतम गणधर पद नमूँ, कुन्दकुन्द आचार्य।
पूज्य पाद गुरु पद नमन, सिद्ध होय सब कार्य॥3॥
चन्दन षष्ठी व्रत विशद, पूजन अति सुखकार।
नाश हेतु भव का भ्रमण, करते मंगलकार॥4॥
भादव कृष्णा षष्ठि को, इस व्रत का दिन जान।
तन मन से आरम्भ तज, करें प्रभू का ध्यान॥5॥
इन्द्रिय विषय निरोधकर, हो उपवास महान।
पूज्य पाद स्वाध्याय में, सदा लगाएँ ध्यान॥6॥
छह वर्षों तक व्रत करें, भविजन इसी प्रकार।
फिर उद्यापन कर तजें, मन के सकल विकार॥7॥
यथा शक्ति मण्डल मड़ा, पूजा रचें विधान।
रोग शोक भय दूर हों, हो कर्मों की हान॥8॥
उत्तम लेकर ग्रन्थ छह, और करें शुभ दान।
ग्रन्थ प्रकाशन कर हरें, जीवों का अज्ञान॥9॥
हो प्रभावना धर्म की, फैले धर्म प्रचार।
जिन मंदिर जिन मूर्तियों, का भी करें सम्हार॥10॥
कार्य करें ऐसे विशद, बढ़े धर्म की शान।
देश राष्ट्र औ जाति का, भी होवे उत्थान॥11॥
उद्यापन की शक्ति न, तो व्रत दूना होय।
शास्त्रों का है कथन यह, निश्चय जानो सोय॥12॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चन्दन षष्ठी व्रत पूजन

स्थापना

चन्दन सा है परम सुवासित, चन्द्र प्रभू का चरम शरीर।
कर दे वातावरण सुहाना, ज्यों पुष्पों से आए समीर।
रूप धवल है सुयश धवल है, धवल चन्द्र सम चन्द्र जिनेश।
धवल हृदय में आह्वानन् हम, करते हैं प्रभु हे चन्द्रेश!॥

दोहा- नाम चन्द्र प्रभु आपका, महिमा चन्द्र समान।
चन्दन षष्ठी व्रत करें, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्

॥ विष्णु पद छन्द॥

सरिता का पावन नीर, भरकर हम लाए॥
मिट जाए भव की पीर, अर्चा को आए॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते॥1॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर में गार, प्रभु के पाद धरें।
अब भ्रमण मिटे संसार, भव सन्ताप हरें॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के साथ, चरणों सिरनाते॥2॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं धवल रश्मि सम श्वेत, चावल शुभकारी।
अब अक्षय पद दो नाथ!, अक्षय पद धारी॥

हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते॥3॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये फूल हैं खुशबूदार, सुन्दर महकाएँ।
अब काम रोग हो क्षार, चरणों हम आए॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते॥4॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य लिए रसदार, थाली भर लाए।
हो क्षुधा रोग निरवार, चेतन रस आए॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते॥5॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये दीपक लिया प्रजाल, तम का जो नाशी।
हम मोह से है बेहाल, होवें शिव वासी॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के, साथ चरणों सिरनाते॥6॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में खेते धूप, दश दिशि गंध उड़े।
अब पाए सुपद अनूप, आतम सौख्य बढ़े॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के साथ, चरणों सिरनाते॥7॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वरजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पिस्ता अरु बादाम, श्री फल भी लाए।
अब पा जाए शिव धाम, शिव पाने आए॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के साथ, चरणों सिरनाते॥8॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जल फलादि सब द्रव्य, अर्घ्य बनाये हैं।
अब पाए सुपद अनर्घ, चरण चढ़ाये हैं॥
हे चन्द्र प्रभू! भगवान, तव महिमा गाते।
हम विशद भाव के साथ, चरणों सिरनाते॥9॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा दे रहे, शांती पाने आज।
चाह रहे हम भी विशद, मुक्ति वधु का ताज॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पांजलि करने लिए, पावन हमने फूल।
यह संसार असार तज, पाएँ शिव पद मूल॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- व्रत करते जो भाव से, वे हों मालामाल।
चन्दन षष्ठी की विशद, गाते हैं जयमाल॥

॥ शम्भू छन्द॥

काशी देश बनारस है प्रभु, पार्श्व सुपार्श्व का जन्म स्थान।
राजा सूर सेन की रानी, ज्ञानी थी अतिशय गुणवान॥
षट् ऋतु के फल फूल भेंट में, देने को लाया वनपाल।
हुआ आगमन प्रभू केवली, का राजा ने जाना हाल॥

राजा गया दर्श करने को, पुरुजन परिजन को ले साथ।
तीन परिक्रमा करके प्रभु के, आगे सभी झुकाए माथ॥
मुनिवर ने तब सद्भक्तों को, दिया धर्म का सद्उपदेश।
राजा ने पूँछा क्यों मुझको, है रानी से क्यों स्नेह विशेष॥
देश अवन्ति उज्जैनी में, जिनदत्त सेठ जयवति जान।
ईश्वर चन्द पुत्र की पत्नी, रही चन्दना बहु गुणवान॥
मासोपवासी मुनि अतिमुक्तक, को पड़गाहे ईश्वर चंद्र।
ऋतुमति होकर भी आहार दे, माने मन में जो आनन्द॥3॥
गलित कुष्ट तब हुआ देह में, पति पत्नि दोनों को जान।
गुप्त पाप के फल से पाया, दोनों ने ही कष्ट महान॥
नगरोद्यान में श्री भद्रमुनि, कर विहार आए इक बार।
ईश्वर चन्द ने मुनि से पूछा, मुझे हुआ क्यों कष्ट अपार॥4॥
पात्र दान के लोभ से तुमने, ऋतु मति हो भी दिया अहार।
अपवित्र हो भी पवित्र का, झूठा किया चरित्राचार॥
पश्चात्ताप किया दम्पत्ति वह, रोग मुक्ति का करो उपाय।
चन्दन षष्ठी व्रत करने से, होगी भाई सुन्दर काय॥5॥
भादौवदि षष्ठी को व्रत कर, जिनाभिषेक पूजा कर जाप।
तीन काल सामायिक करके, छोड़े मन वच तन से पाप॥
व्रत पालन कर किए समाधि, पाया स्वर्ग लोक में वास।
वहाँ से चयकर राजा रानी, बनकर पाये श्रेष्ठ विकाश॥
सुनकर राजा ने दीक्षा ले, कर्म नाश पाया निर्वाण।
रानी इन्द्र बनी स्वर्गों में, वह भी पाएगी शिव थान॥

दोहा- ईश्वरचंद सति चन्दना, ने पावन व्रत धार।
स्वर्ग मोक्ष पद प्राप्त कर, पाया सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- धर्म हृदय में धारकर, करें आत्म कल्याण।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान॥

इत्याशीर्वादः

प्रथम कोष्ठ पूजा

दोहा- व्रताराध्य चन्द्र प्रभू, तीर्थंकर भगवान।
व्रत चन्दन षष्ठी करें, करके प्रभू गुणगान॥

प्रथमकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

जिनकी महिमा सारे जग में, खुश होके गाई जाती है।
जिनके चरणों सारी जगती, नत होके शीश झुकाती है॥
हैं चारु चरण चन्द्र प्रभु के, जिनसे चन्दन सी आए बहार।
चन्दन षष्ठी के व्रताराध्य, तुम चरणों वन्दन बारम्बार॥

दोहा- चरणों में है अर्ज यह, चन्द्र प्रभु भगवान।
आओ पधारो मम् हृदय, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन शुभ यहाँ चढ़ाएँ, भव का सन्ताप नशाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु काम रोग विनशाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, हम क्षुधा नशाने आए।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये दीप जलाएं, हम मोह नशाने आए।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अग्नि में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब मोक्ष महाफल पाएँ।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद लाए।
पहली पूजा शुभकारी, हम करते मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा- अर्चा करते जीव जो, करके भाव उदार।
सुख शांती वे जीव सब, पावें शांति अपार॥

शांतये शांति धारा

दोहा- पुष्पांजलि जो भी करें, भक्ति भाव के साथ।
इस भव के सब सौख्य पा, बनें श्री के नाथ

॥ परिपुष्पांजलि क्षिपेत्॥

प्रथम वर्ष का अर्घ्य

प्रथम वर्ष में चन्दन षष्ठी, व्रत करके जो करें विधान।
जिन अर्चा में मन स्थिर हो, करें आत्मा का कल्याण॥
श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चन्द्र प्रभू की कांति शुभ, फैली चन्द्र समान।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

।। ज्ञानोदय छन्द।।

चन्द्र चाँदनी सम चन्द्र प्रभु, के चरणों में करूँ प्रणाम।
तीन योग से अर्चा करके, हम भी करें आत्म कल्याण।।
अष्टम तीर्थंकर बनकर के अष्ट कर्म को नाश किया।
अष्ट गुणों को पाकर के प्रभु, सिद्ध शिला पर वास किया।।1।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, केवल ज्ञान जगाया है।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, विशद ज्ञान प्रगटाया है।।
वेदनीय जड़ मूल नाश कर, निरावाध गुण पाया है।
मांह कर्म को जीत आपने, गुण सम्यक्त्व जगाया है।।2।।
आयु कर्म बन्धन को नाशे, अवगाहन गुण धारी जी।
नाम कर्म का नाम रहा ना, हुए आप त्रिपुरारी जी।।
गोत्र कर्म दो भेद विनाशी, अगुरुलघु गुण पाया है।
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त जगाया है।।3।।
कर्म घातिया के नशते प्रभु, अनन्त चतुष्टय पाते हैं।
अर्हत् पद के धारी होकर, दिव्य ध्वनी सुनाते हैं।
कर्म अघाती के नशते ही, सिद्ध शिला पर जाते हैं।।
ज्ञान शरीरी होकर के प्रभु, "विशद" मोक्ष पर जाते हैं।।

दोहा- अष्ट कर्म को नाशकर, गुण प्रगटाए आठ।
अष्टम वसुधा को चले, हुए हैं ऊँचे ठाठ।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कोटि चन्द्र से भी अधिक, हैं प्रभु ज्योर्तिमान।
धवल रंग में शोभते, चन्द्र प्रभू भगवान।।

इत्याशीर्वादः

द्वितीय कोष्ठ पूजा

दोहा-द्वितीय कोष्ठ पर हम करें, पुष्पांजलि शुभकार।
चन्दन षष्ठी सुव्रत की, अर्चा मंगलकार।।

द्वितीय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपामि

स्थापना

जिनकी महिमा इस जगती पर, खुश हो गाते सारे जीव।
जिनके चरणों अर्चा करते, नत होके जिन चरण अतीप।।
चारु हैं चरण चन्द्र प्रभु के, जिनसे अनुपम आये बहार।
चन्दन षष्ठी के व्रताराध्य, तव चरणों वन्दन बारम्बार।।

दोहा- चरणों में है प्रार्थना, चन्द्र प्रभु भगवान।
आओ पधारो मम् हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं गौ क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

नील गगन से उठी तरंगों, सी लेकर के जल धारा।
अर्पित करते नाथ चरण में, करो सफल जीवन सारा।।
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, जन्म जरा से छुटकारा।।1।।

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन फैलाता घिसने पर, चारों दिश में श्रेष्ठ सुगन्ध।
भव संताप नाश कर हे प्रभु, हो जाँऊगा मैं निर्द्वन्द।।
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, भवाताप से छुटकारा।।2।।

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल स्वच्छ ले निर्मल, नाथ! आपके आया द्वार।
भक्त शरण में आया हे प्रभु! करने को कर्मों का क्षार॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, क्षय जीवन से छुटकारा॥3॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित श्रेष्ठ सुगन्धित लाया, पुष्प मनोहर भरे सुवास।
हे प्रभु! सम्यक् चारित्र पाके, महक उठे मानव इतिहास॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, काम रोग से छुटकारा॥4॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मनोहर सुरभित चरु मैं, सदियों से खाता आया।
रसना इन्द्रिय वश करने अब, सुचरु चढ़ाने यह लाया॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, क्षुधा रोग से छुटकारा॥5॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या मोह हृदय में छाया, भटक रहा सारा संसार।
दीपक ले पूजूँ हे जिनवर!, दूर करो भ्रम तम इस बार॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, मोह तिमिर से छुटकारा॥6॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रयत्न किया है भव-भव में पर, कर्म नहीं कर सके शमन।
परम सुगन्धित धूप जलाते, अष्ट कर्म का होय दमन?॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, अष्ट कर्म से छुटकारा॥7॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कैसे पाएँ मोक्ष मार्ग को, सिर पर चढ़ा पाप का भार।
फल से पूज रहे हे स्वामी, पाने को अब शिव का द्वार॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, नश्वर जग से छुटकारा॥8॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ प्रभु अरहंत सुपद को शिवपद को तुमने पाया।
मेरे पास नहीं है कुछ भी, फिर भी अर्घ्य बना लाया॥
विशद अर्चना को प्रभु मेरी, यदि आपने स्वीकारा।
मुझको भी मिल जाएगा प्रभु, पुण्य पाप से छुटकारा॥9॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा के लिए, भर कर लाए नीर।
इस भव से मुक्ती मिले, मिल जाए भव तीर॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्प मँगाए बाग से, पुष्पांजलि के हेतु।
अर्चा करते भाव से, पाने शिव का सेतु॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

द्वितिय वर्ष का अर्घ्य

द्वितिय वर्ष में चन्दन षष्ठी, का व्रत करके प्रभु गुणगान।
करें भाव से पूजा अर्चा, स्वाध्याय कर करना ध्यान॥
श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभू, चमकें चन्द्र समान।
श्रद्धा भक्ती भाव से, करते हम जयगान॥

॥ ज्ञानोदय छन्द॥

अमर चन्द प्रभु बने लोक में, रत्नत्रय के पावन धाम।
निज गुण घाती कर्म शत्रुओं, से करने वाले संग्राम॥
आत्म ध्यान का दीप जलाकर, निज चेतन को जगा दिया।
मोह तिमिर जो काल अनादी, उसको तुमने भगा दिया॥1॥
निज कषाएँ के बन्धन तोड़े, ज्ञान सुरभि को प्रगट किया।
भूला हुआ था निज का वैभव, उसको निज से जगा लिया॥
हे प्रभु! तव तन की श्री छवि से, बाह्य सघन तम यहाँ छटा।
दिनकर को लख तम ज्यों भागे, विशद पूर्ण अज्ञान हटा॥2॥
तपः साधना अनुपम करके, हित उपदेशक आप्त बने।
परम इष्ट पद पाने वाले, कर्म घातिया आप हने॥
सुखानन्त के धाम आप हो, विश्व विज्ञ हे अविनश्वर !।
करुणाकर जग के तम नाशक, भव से तारक हे ईश्वर !॥3॥
भव्य कुमुद तम शशि के दर्शन, करके निज दृग खोल रहे।
राग द्वेष मय मेघ आपके, चेतन में नहिं डोल रहे॥
स्याद्वाद युत विशद वचन की, मणिमय माला के धारी।
परम पूत हो पावन कर दो, यह अखण्ड जगती सारी॥4॥
चन्द्र कलंकित रहा लोक में, किन्तू आप अकलंक रहे।
शंकित है वह केतू ग्रह से, नाथ! आप निःशंक रहे॥
रंक बना में खड़ा द्वार पर, मेरे मन का पंक हरो।
जाप करूँ मैं आप नाम का, मुझे नाथ स्वाधीन करो॥5॥

दोहा- विशद सिन्धु पूजा रचे, अतिशय मंगलकार।
अर्चा करते भाव से, जिन पद बारम्बार॥

ॐ ह्रीं क्षीरवत् उज्ज्वल-यश-धारकाय श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा करते आपकी, हे प्रभु चन्द्र जिनेश!।
शिव पथ पर बढ़के 'विशद', पावे निज स्वदेश॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत॥

तृतिय कोष्ठ पूजा

दोहा- व्रताराध्य चन्द्र प्रभू, तीर्थंकर भगवान।
व्रत चन्दन षष्ठी करें, करके प्रभू गुणगान॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

चन्द चिन्ह के धारी पावन, चन्द्र प्रभू है जिन का नाम।
नर नरेन्द्र विद्याधर मुनिवर, करते जिनके चरण प्रणाम॥
रत्नत्रय को धारण करके, किए घातिया कर्म का विनाश।
ललित कूट सम्मेद शिखर से, किया आपने शिवपुर वास॥

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, चन्द्र प्रभू भगवान।
शिवपथ पाने के लिए, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज-माता तू दया करना

हम श्रद्धा भक्ती से, यह निर्मल जल लाए।
जन्मादिक रोग नशे, प्रभु चरण शरण आए॥
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाश करके शिवपदवी को पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमदेवाय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से भी शीतल, प्रभु चरण धूलि गाई।
संसार ताप नाशी, इस जग में बतलाई॥

हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाश करके, शिवपदवी को पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षण भंगुर वैभव, है भव वृद्धीकारी।
अब अक्षय पद पाना, शाश्वत् जो अविकारी।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाश करके शिवपदवी को पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर की अर्चा से, श्रद्धा के फूल खिलें।
जो काम रोग नाशें, वे निज से स्वयं मिलें।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाश करके शिवपदवी को पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय कामवाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म असाता से, चिरकाल सताए हैं।
अब क्षुधा नशाने को, चरणों में आए हैं।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाशकरके शिवपदवी को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय क्षुधारोग विनाशनायनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु मम अन्तर में, घनघोर अंधेरा है।
अब ज्ञान का दीप जले, प्रभु लक्ष्य ये मेरा है।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाशकरके शिवपदवी को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उपयोग भटकता है, कैसे निज को पाएं।
कर्मों की धूप जला, अब निज में रम जाएँ।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाश करके शिवपदवी को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल पाके, हम जग में भटके हैं।
ना मुक्ती फल पाया, संसार में अटके हैं।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाशकरके शिवपदवी को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आठों द्रव्यों का शुभ, अर्घ्य बनाया है।
हम पद अनर्घ्य पाएं, यह मन में आया है।।
हम चन्दन षष्ठी व्रत, करके जिन गुण गाएँ।
अब कर्म नाशकरके शिवपदवी को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ परमेश्वराय अनर्घ्य पद प्र प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा-हो शांती का वास, जीवन में मेरे विशद।
होवे पूरी आश, नीर चढ़ाते भाव से।।

शांतये शांति धारा

सोरठा-पाएँ शिव सोपान, पुष्पांजलि करके विशद।
करते हम गुणगान, चन्द्रप्रभु भगवान का।।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तृतीय वर्ष का अर्घ्य

चन्दन षष्ठी व्रत का पालन, तृतिय वर्ष में करें विशेष।
कर्म निर्जरा करके शिव पद, पाना रक्खे निज उद्देश्य।।

श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चन्दन सम शीतल हुए, चन्द्रप्रभु भगवान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हैं गुणगान॥

॥ ज्ञानोदय छन्द॥

चिन्तामणि श्री चन्द्रप्रभू जी, शोभित होते आभावान।
वीतराग अरहंत प्रभू जी, रहे लोक में महति महान ॥
चन्द्रपुरी के महासेन नृप, हुए यशस्वी अतिगुणवान।
मात लक्ष्मणा के उर से प्रभु, जन्में तीर्थंकर भगवान॥1॥
चन्द्रप्रभू का जन्म हुआ तव, देव किए अतिशय गुणगान।
न्हवन कराए मेरु सुगिरि पर, स्वर्ग लोक के देव प्रधान॥
न्याय नीति से राज्य चलाए, आप हुए जब यौवन लीन।
चन्द्र पुरी के राजा बनकर, सिंहासन पर हो आसीन॥2॥
देख चमकती बिजली तत्क्षण, मन में धारे आप विचार।
यह जीवन क्षण भंगुर सारा, लिए आप तव दीक्षा धार॥
तीन माह तक मौन रहे प्रभु, कठिन तपस्या धार जिनेश।
द्वादश तप के ही प्रभाव से, कर्म निर्जरा किए विशेष॥3॥
चार घातिया कर्म नाशकर, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
समवशरण तव रचे देव शुभ, दिव्य देशना पाए आन॥
समवशरण से नाथ! आपने, सार वस्तु का बतलाया।
नहीं सुनी प्रभु दिव्य देशना, अतः शरण में मैं आया॥4॥

दोहा- ललितकूट सम्मेद गिरि, से पाए शिवराज।
भक्त आपकी अर्चना, करते हैं सब आज॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर॥

इत्याशीर्वादः

चतुर्थ कोष्ठ पूजा

दोहा- तीन लोक में पूज्य हैं चन्द्रप्रभ भगवान।
अर्चा करते भाव से, करते हम गुणगान॥

चतुर्थ कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

चन्द्र समान कांति के धारी, लक्षण चन्द्र रहा शुभकार।
चन्द्र समान सुयश पाया है, चन्द्र प्रभू हैं मंगलकार॥
चन्द्र प्रभू को वन्दन करते, भूतल के सारे नर नार।
आह्वानन् करते हम उर में, चन्द्र प्रभू का बारम्बार॥

दोहा- महिमा गाते भाव से, करते चरण प्रणाम।
तव अर्चा करके प्रभू, पाएँ मोक्ष ललाम॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ मोतियादाम-छन्द॥

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत आभावान, प्राप्त हो अक्षय सुपद महान।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प से आये परम सुवास, कामरुज का हो जाये नाश।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु यह लाय हम रसदार, क्षुधा रुज हो जावे अब नाश।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में खेने लाए धूप, कर्म नश पाए सुपद अनूप।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महति महान।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
चन्द्रप्रभु के चरणों में आन, भाव से करते हैं गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
गुण गाते जिनराज पद, अतिशय बारम्बार॥

शान्तये शांति धारा

दोहा- पुष्पांजलि करते प्रभो!, पाने पुष्प पराग।
मोक्ष महापद प्राप्त हो, बुझे राग की आग॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वर्ष का अर्घ्य

चौथे वर्ष में चन्दन षष्ठी, व्रत करते हैं जो जग जीव।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, प्राणी पावें पुण्य अतीव॥
श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चन्द्र प्रभू के चरण में, इन्द्र करें नत भाल।
जिनकी गाते आज हम, भाव सहित जयमाल॥

॥ राधेश्याम छन्द॥

ऋषि मुनिवर गणधर आदिक भी, जिनका शुभ ध्यान लगाते हैं।
वे ऋद्धि सिद्धियाँ पाकर के, भव सागर से तिर जाते हैं॥
जो गुण अनन्त के धारी हैं, चिन्मूरत हैं जग के स्वामी।
प्रभु शरणागत को शरणरूप, जग के त्राता अन्तर्यामी॥1॥
हे चन्द्रप्रभु! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम जग की जड़ता हर लेते हो॥
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित् चेतन की निधि मिल जाती॥2॥
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो॥

जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोई खाली हाथ न जाता है।।3।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहु मूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।4।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह पद शिवपुर को जाता है।
उस पद का जो अनुयायी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
वह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।5।।

।। घत्ता छन्द।।

जय जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा, सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख पाने को "विशद", चरण झुकाते माथ।।

इत्याशीर्वाद:

पंचम कोष्ठ

दोहा- चन्द्रप्रभु की अर्चना, करते हैं जो जीव।
शिव पददायी जीव वे, पावें पुण्य अतीव।।

पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

हे लोक पूज्य अरहंत परम! हे कर्म विनाशक तीर्थंकर!।
हे तीन लोक के अधिनायक, हे मोक्ष प्रदाता शिव शंकर!।।

हे सर्व चराचर के ज्ञाता!, हे सद् भक्तों के आभूषण।
हे पावन रत्नत्रय धारी! तव करते हैं हम आह्वानन्।।

दोहा-चन्द्र प्रभू तव नाम है, उज्ज्वल चन्द्र समान।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन् ! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्

।। हरिगीता छन्द।।

हे नाथ! हम मिथ्यात्व ग्रह को, ना कभी भी जय किए।
यूँ काल अनादी बीता है, रोग त्रय ना क्षय किए।।
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा।।1।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव क्रूर ज्वर दे रहा पीड़ा, रोग क्षयकारी मुझे।
हे नाथ अब तक भाई क्रीड़ा, विशद संसारी मुझे।।
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा।।2।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विषपान करके दुखदायी, हम मरण को अपना रहे।
अक्षय सुपद को तज सभी, सक्षय विपद को पा रहे।।
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धा न मेरा भी रहा।।3।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम भावों से नहीं हम, जुड़ सके हैं हे प्रभो!।
कंदर्प दर्प विकार मकर, ध्वजी में खोये विभो!।।

हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥4॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामवाणविध्वंशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा।

विषमयी भोजन हमने खाया, निज स्वाभावी छोड़कर।
प्रभु निराहारी आत्मा से, रहे हम मुख मोड़कर॥
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥5॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याय दृष्टी जीव को, संसार का नेता कहा।
है द्रव्य दृष्टी जीव जो वह, मोह का जेता रहा॥
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥6॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब कर्म पर्वत भेदने की, कला को पाना अहा।
शुभ लक्ष्य केवल ज्ञान पाना, श्रेष्ठ तम मेरा रहा॥
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥7॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय सुख का स्वाद मधुरिम जानते अज्ञान से।
किन्तु मधू विषय कुफल यह, नहीं जाना ज्ञान से॥
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥8॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

बहूमूल्य माने पंच इन्द्रिय, के विषय को हे प्रभो!।
परमाणु भी मेरा नहीं फिर, मूल्य इनका क्या विभो!॥
हम सुव्रत चन्दन षष्ठि की शुभ, अर्चना करते अहा।
श्री चन्द्र प्रभ के चरण में, श्रद्धान मेरा भी रहा॥9॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा जो करें, वे पावें शिव कूल।
उत्तम तप को धारकर, करें कर्म निर्मूल॥

शान्तये शांति धारा।

दोहा- पुष्पांजलि करके विशद, पाना शिव सोपान।
अतः आपका हे प्रभो!, करते हम गुणगान॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

पंचम वर्ष का अर्घ्य

है प्रभाव कारी यह पावन, चन्दन षष्ठी व्रत शुभकार।
पंचम वर्ष में पूजा करके, और जाप कर मंगलकार॥
श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- व्रताराध्य चन्द्रप्रभू, अतिशय महिमावान।
जयमाला गाते यहाँ, जिनकी महति महान॥

॥ ताटंक छन्द॥

हम चन्द्र प्रभु के श्री चरणों में, श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो चन्द्र समान समुज्ज्वल हैं, हम उनके गुण शुभ गाते हैं॥
जो परम पूज्य हैं जगत श्रेष्ठ, उनके चरणों सिरनाते हैं।
हम विशद ज्ञान के धारी जिन, के चरणों शीश झुकाते हैं॥1॥
प्रभु दिनकर हैं करुणासागर हैं, ये ही जन-जन के त्राता हैं।

ये तीन लोक में पूज्य रहे, ये तीन काल के ज्ञाता हैं॥
प्रभु के चरणों की भक्ती से, सब रोग शमन हो जाते हैं।
इनके चरणों में लीन रहें, तो कर्म सभी खो जाते हैं॥2॥
गुणगान आपका करूँ विशद, मुझको प्रभु ऐसी शक्ती दो।
मैं रहूँ भक्ति में सराबोर, हमको प्रभु ऐसी भक्ती दो॥
मैं पतित रहा तुम पावन हो, मैं पावन होने को आया।
जिस पद को तुमने पाया है, मैं उस पद को पाने आया॥3॥
हे दीन बन्धु! हे कृपा सिन्धु! बस इतना सा उपकार करो।
मुझ भूले भटके राही को, सद् राह दिखा उद्धार करो॥
हे दया सिन्धु! तुम दया करो, विनती मेरी स्वीकार करो।
मेरे जीवन की नौका को, भव सागर से प्रभु पार करो॥4॥
तुम सिद्ध सनातन अविनाशी, जग जन के सिद्धी दाता हो।
तुम भूमण्डल के चिर ज्योति, शुभ विधि के आप विधाता हो॥
हे प्रभू! आपके द्वारे पर, ये भक्त खड़ा है आश लिए॥
हमको भव पार उतारोगे, हम खड़े चरण विश्वास लिए॥5॥

दोहा- पूजा करते आपकी, नत होकर हे नाथ!।
पाने को आशीष हम, झुका रहे हैं माथ॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ आपके द्वार पर, लाए हैं अरदास।
"विशद" भावना है यही, पाएँ शिवपुर वास॥

इत्याशीर्वाद

षष्ठम कोष्ठ पूजा

दोहा-चन्द्र प्रभु चमकें विशद, पावन चन्द्र समान।
पुष्पांजलि करते चरण, लेकर पुष्प महान॥

षष्ठम कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

चन्द्र समान सुयश के धारी, चन्द्र प्रभू मेरे भगवान।
चन्द चाँदनी फीकी पड़ती, देह आपकी आभावान॥
गुण गाती है सारी दुनिया, करे आपका मंगलगान।
विशद हृदय में नाथ! आपका, करते हैं हम भी आह्वान॥

दोहा- गुणानन्त के कोष हैं, चन्द्रनाथ भगवान।
भक्त बने हम आपके, पाने पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वानन्! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ नरेन्द्र छन्द॥

होती जयजयकार जगत में, जिनका सब गाते यशगान।
निर्मल नीर से अर्चा करते, सम्यक् श्रद्धा जगे महान॥
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के, चन्द्रप्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ज्योति उद्योतित होती, मोह तिमिर हरने वाले।
चन्दन से पूजा करते हैं, भक्त चरण के मतवाले॥
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर विद्याधर आकर के, करते हैं सम्यक अर्चन।
अक्षत से पूजा करते हैं, जिन पद में करके वन्दन॥
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी वतोद्यापने श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से तारण हारे, मोक्ष महल ले जाते हैं।
पुष्प मालिका से पूजा कर, शिव समृद्धी को पाते हैं।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के ज्ञेय आप हैं, ज्ञान में सब झलकाए हैं।
शुभ नैवेद्य बनाकर पूजा, करने को तव आये हैं।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह पास की अग्नि जलाकर, भू मण्डल को त्रस्त करे।
विशद ज्ञान का दीप जले, तो मोह अन्ध को अस्त करें।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से नश जाती हैं, भव की सारी पीड़ाएँ।
अष्ट कर्म यह करा रहे हैं, जग में अगणित क्रीड़ाएँ।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभ जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, विपुल सौख्य प्राणी पाते।
फल से अर्चा करने वाले, मोक्ष महापद पा जाते।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक पद की अभिलाषा से, कर्मों पर जो वार किये।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, स्वयं आप उपकार किए।।
व्रताराध्य चन्दन षष्ठी के चन्द्र, प्रभू जी हुए महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते भाव सहित गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तयें निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
रत्नत्रय धारी विशद, करें आत्म उद्धार।।

शांति धारा

दोहा- पुष्पित पुष्पों से विशद, होवे गंध महान।
पुष्पांजलि के भाव से, करें जीव कल्याण।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

छटवें वर्ष का अर्घ्य

छठे वर्ष में चन्दन षष्ठी, का व्रत प्राणी करें महान।
शिव पथ के राही बनकर के, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा अनुपम, जिससे पाएँ पुण्य निधान।
अनुक्रम से जो मोक्ष प्रदायी, देने वाली शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-चन्दन षष्ठी व्रत करें, जो भी बालाबाल।
चन्द्रप्रभू की वे सदा, गावें यह जयमाल।।

।। विष्णू पद छन्द।।

चन्द्रप्रभु की महिमा सारे, इस जग ने गाई।
शरणागत बनके लोगों ने, पाई प्रभुताई।।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए प्रभु, सुर नर हर्षाए।
मात सुलक्षणा महासेन गृह, विशद हर्ष छाये।।1।।

राज पाट सुख भोग प्राप्त भी, तुम्हें नहीं भाए।
छोड़ चले गृह जाल जानकर, संयम अपनाए॥
निज आतम का ध्यान लगाकर, योग आप धारे।
विशद ज्ञान पाया प्रभु तुमने, नशे कर्म सारे॥2॥
समन्तभद्र मुनिवर ने तुमको, भाव सहित ध्याया।
प्रकट हुए पिण्डी के फटते, प्रभू दर्श पाया॥
अष्टम तीर्थंकर कहलाए, चन्द्र प्रभु स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मुक्ती पथ गामी॥3॥
तव चरणों में भूत प्रेत की, बाधाएँ जावें।
चरणों की रज माथ लगाते, इच्छित फल पावें॥
दुखिया दर पर आने वाले, दुख खोके जाते।
निर्धन धन की इच्छा करते, इच्छित धन पाते॥4॥
चमत्कार इस सारे जग में, फैला है भाई।
जिसने जो इच्छा की दर पे, वह वस्तू पाई॥
महिमा सुनकर नाथ! आपके, हम दर पे आए।
अर्घ्य चढ़ाने अष्ट द्रव्य का, 'विशद' चरण लाए॥

दोहा- चन्द्र चाँदनी सम रहे, चन्द्र प्रभू भगवान।
जिनकी अर्चा कर "विशद", पाना शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अष्टम तीर्थंकर बने, अष्ट गुणों के ईश।
आठों अंगों को नमित, झुका रहे हम शीश॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

जाप मंत्र-ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा- चन्दन षष्ठि विधान में, चन्द्रप्रभू गुणगान।
जयमाला के साथ में, करते भव्य महान॥

॥ त्रोटक छन्द॥

जय जिनेन्द्र श्री चन्द्र नमस्ते, पूजित शत् शत् इन्द्र नमस्ते।
चिदानंद चिद्रूप नमस्ते, ज्ञायक निज स्वरूप नमस्ते॥
निराकार निर्वाण नमस्ते, धारी केवल ज्ञान नमस्ते।
परम पूज्य अविकार नमस्ते, मुक्ति वधु के घर नमस्ते॥
ज्ञान ध्यान तप रुप नमस्ते, स्वयं बुद्ध स्वरुप नमस्ते।
स्वर्ग से किए प्रयाण नमस्ते, चन्द्रपुरी में आन नमस्ते॥
पाए गर्भ कल्याण नमस्ते, जन्म लिए भगवान नमस्ते।
राग द्वेष मद ध्वान्त नमस्ते, अतिशय मुद्रा शांत नमस्ते॥
पाए तप कल्याण नमस्ते, पंचमहाव्रत वान नमस्ते।
करके शुक्ल शुभ ध्यान नमस्ते, पाए केवल ज्ञान नमस्ते॥
समवशरण शुभकार नमस्ते, दिव्य ध्वनि ॐकार नमस्ते।
तीन गती के जीव नमस्ते, पाएँ पुण्य अतीव नमस्ते॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान नमस्ते, पाए मोक्ष कल्याण नमस्ते।
तीर्थराज सम्मेद नमस्ते, करके योग निरोध नमस्ते॥
ललित कूट शुभकार नमस्ते, किए कर्म सब क्षार नमस्ते।
धीर वीर गंभीर नमस्ते, पाए भव का तीर नमस्ते॥
प्रभुजी भवदधितार नमस्ते, सर्व दोष निरवार नमस्ते।
ऋद्धि सिद्धि दातार नमस्ते, सुखकारी दुखहार नमस्ते॥
शरणागत प्रतिपाल नमस्ते, पूज्य आप त्रयकाल नमस्ते।
रोग शोक परिहार नमस्ते, शुद्धि बुद्धि दातार नमस्ते॥

दोहा- शिव दर्शायक आप हो, ज्ञायक सम्यक ज्ञान।
चन्द्रप्रभू हम आपका, करते हैं गुणगान॥

ॐ ह्रीं चन्दन षष्ठी व्रताराध्य श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चन्दन षष्ठी व्रत "विशद" शिव का है सोपान।
जीव करे जो भाव से, पावें मोक्ष निधान॥

इत्याशीर्वादः

श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्र प्रभु स्वामी।
तुम हो विघ्न विनाशक, हे अन्तर्यामी॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥टेक॥

वैजयन्त से चयकर आये, चन्द्रपुरी स्वामी-2।
मात सुलक्षण महासेन सुत-2, मुक्तीपथ गामी॥
ॐ चय चन्द्रप्रभु स्वामी॥1॥

जन्म समय पर स्वर्ग लोक से, इन्द्र स्वयं आया-2।
न्हवन कराके पाण्डु लिशा पे-2, अतिशय हर्षाया॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥2॥

यह संसार असार जानकर, तुमने दीक्षाधारी-2।
सन्त दिगम्बर बनके-2, हो गये अनगारी॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥3॥

केवल ज्ञान जगाया तुमने, घातीक कर्म क्षये-2।
ललित कूँट सम्मेद शिखर से-2, शिवपुर आप गये॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥4॥

चन्दन षष्ठी व्रताराध्य की, आरती हम गाये-2।
'विशद' सभी अपराध क्षम्म हो-2, अरदास यही लाये॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥5॥

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
तुम हो विघ्न विनाशक, हे अन्तर्यामी॥
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी॥टेक॥